बोली तो ऐसे बोली

लगभग 2500 वर्ष पहले की बात है। धारा नगरी में राजा भोज का शासन था। राजा भोज न्यायप्रिय और प्रजा पालक राजा थे। वह अनेक प्रकार की विद्याओं में पारंगत होने के साथ-साथ पशु-पक्षियों की बोली समझने में भी प्रवीण थे।

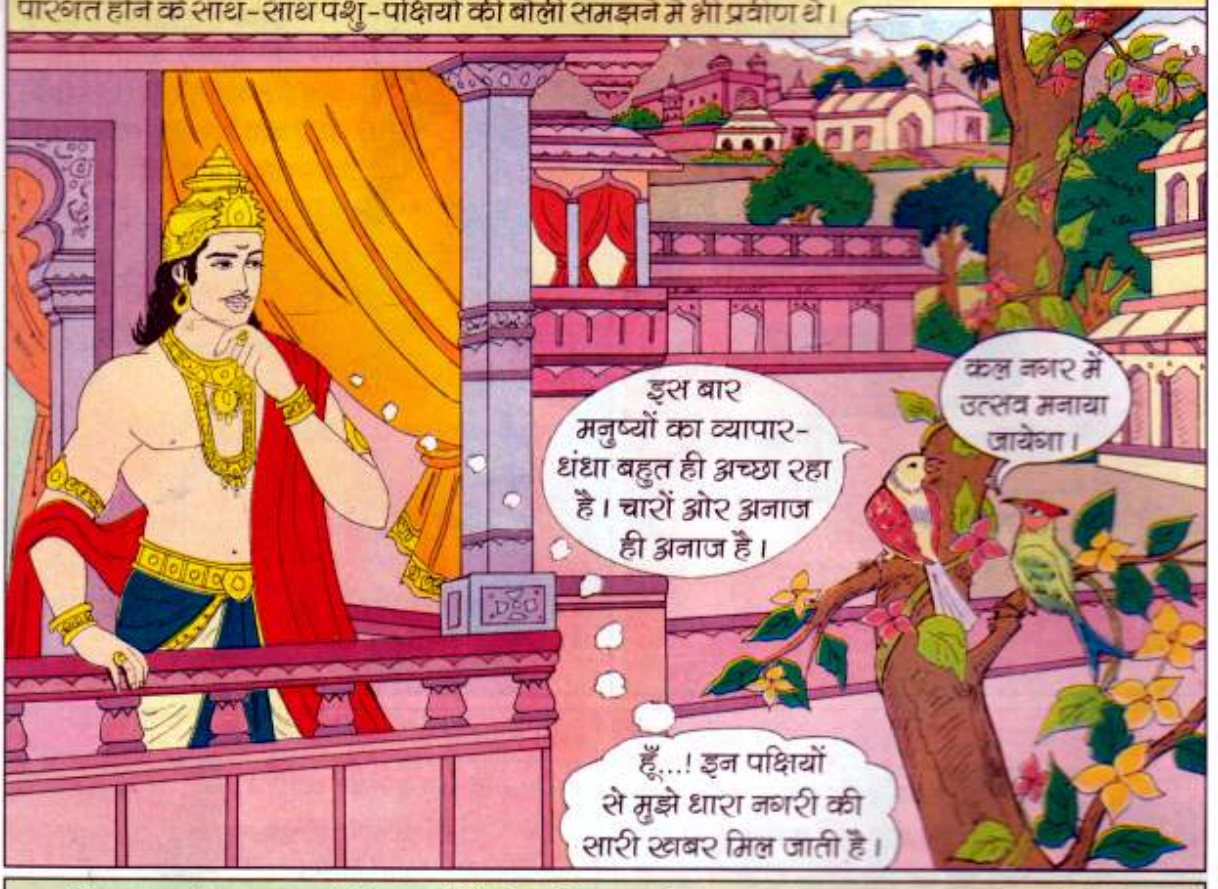

एक दिन राजा भोजन कर रहे थे। पास में बैठी रानी भानुमति उनको भोजन परोस रही थी। इतने में ही थाली से गिरा हुआ चावल का एक दाना लेकर एक चींटी भागी। उधर से दूसरी चींटी ने उसके मुँह से वह दाना छीनना चाहा। उसे टोककर पहली चींटी बोली—

उन दोनों का संवाद सुनकर राजा के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गई।

राजा को अचानक हँसते देख रानी ने कारण जानना चाहा—

परन्तु रानी अपनी जिद पर अड़ी रही। बार-बार पूछने पर भी जब राजा ने हँसकर टाल दिया तो उसने भी अपना त्रियाहठ दिखलाया—

यह सुनकर राजा दुविधा में फँस गया। वह सोचने लगा—

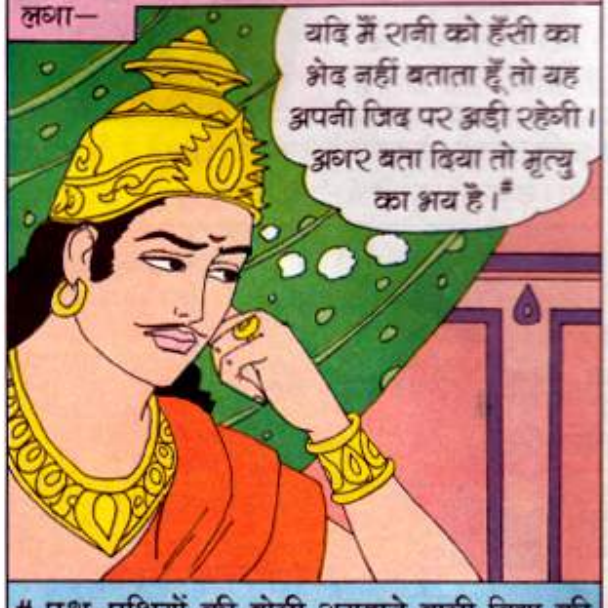

पशु-पक्षियों की बोली समझने वाली विद्या की विशेषता थी कि भेद खुलने पर विद्या जानने वाले की मृत्यु हो जाती थी।

राजा ने रानी को समझाते हुए कहा—

बार-बार समझाने पर भी रानी किसी बात को सुनने को तैयार नहीं थी और अपनी जिद पर अड़ी रही। तब राजा ने भोज ने सोचा—

मौत निश्चित है तो यहाँ क्यों मरूँ? गंगा के तट पर जाकर शांति से प्राण त्यागूँगा।

यही सोचकर राजा ने रानी से कहा—

महारानी! हम आपको इस बात का भेद गंगा के तट पर बतायेंगे। आप परिवार सहित गंगा तट पर चलिए।

ठीक है महाराज! मैं आपके साथ गंगा तट पर चलूँगी लेकिन आपकी हँसी का रहस्य समझकर ही रहूँगी।

अगले दिन राजा भोज रानी को लेकर गंगा तट की ओर चल दिये। मार्ग में उन्हें एक बकरा-बकरी दिखाई दिये। बकरी बकरे से कुएँ में लटकती काचर की बेल की ओर संकेत करके कह रही थी—

प्रियवर! मुझे वह काचर की बेल ला दीजिए। मेरी उसे खाने की ईच्छा हो रही है।

यह सुनकर बकरे ने इनकार में गर्दन हिलाते हुए कहा—

तुमने क्या मुझे राज भोज जैसा मूर्ख समझ रखा है, जो स्त्री के कहने में आकर मौत के मुँह में चला जाऊँ। मैं ऐसा कार्य कदापि नहीं करूँगा।